Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XIX, July-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

नारी-विमर्श के संदर्भ में मन्नू भण्डारी और शिवानी की कथा-साहित्य और उनके उपन्यासों के उद्देश्य

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XIX,July-2015, ISSN 2230-7540

नारी-विमर्श के संदर्भ में मन्नू भण्डारी और शिवानी की कथा-साहित्य और उनके उपन्यासों के उद्देश्य

Dr. Vikas Dubey*

Professor in Hindhi

----------X----------

प्रस्तावना:-

नारी मन की गाथा को व्यक्त करने वाली लेखिकाओ में शिवानी का नाम मील का पत्थर है| नारी के साथ न्याय करने का प्रयास इन लेखिकाओ ने अपनी लेखनी द्वारा साहित्य के माध्यम से किया है| नारी के विविध रूपों को समझने का प्रयास भी किया है|

एक माँ, बेटी, पत्नी, बहन, प्रेमिका, सखी, साथी अनेक रूपों में नारी का मंथन होता रहा है| वैसे "नारी की भावनाओ को नारी ही बेहतर समझती है" ऐसा कहा जाता है| अतः इसी उक्ती अनुरूप इन महिला लेखिकाओ ने समग्र नारी संवेदना को अपनी कलम के माध्यम से समाज के सामने लाया है| शिवानी की कलम व उपन्यास इसी बात को सिद्ध करती है|

उसी प्रकार मन्नू भण्डारी की कथा, उपन्यास साहित्य में नारी वर्ग की संवेदनात्मक स्थितिओ का शमतापुन्य प्रतिनिधित्य करने वाली महिला लेखिका है| महिला होने के बाबजूद भी स्त्री और पुरुष संबंधो का चित्रण उन्होंने जिस प्रमाणिकता और तटस्थरता के साथ किया है, वह निश्चित ही प्रशन्नीय है| नैतिक संबंधो के बदलाव और उसमे पड़ने वाली दरार को इन्होने अपनी विशिष्ठ द्रष्टि प्रदान की है| मन्नू भंदरीजी हिंदी साहित्य जगत की एक एसी महिला लेखिका है कि जिसने प्रेम के त्रिकोण को नई द्रष्टि से उठाया है| वह अक्सर प्रेम विषयक परिस्थितियो में नारी को द्वंध रूप में चित्रित करती है|

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों के उद्देश्य का लोकतात्विक वैशिष्टय:-

मुंशी प्रेमचंद्र ने उपन्यास और उसके उद्देश्य के संबंध में कहा है, मै उपन्यास को मानव –चरित्र का चित्र मानता हू, और मानव जीवन के रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का प्रमुख कर्त्तव्य है|

वास्तव मे उपन्यास साहित्य के सभी अंगो में आधुनिक युग – संदर्भो की अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम मन जाता है| इस द्रष्टि से उसकी समता और कोई साहित्यांग नहीं कर सकता | वस्तुता उपन्यासकार अपनी कृति में किसी विशिष्ठ द्रष्टिकोण का सहारा लेता है, और उसके आधार पर मानव –जीवन का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन दर्शन का स्पष्टीकरण करता है| वह मनुष्य के जीवन के विविध पहलुओ को गहराई से देखने परखने की सौद्देश्य चेष्टा करता है| बाबू गुलाबराय जी ने इसे यों कहा है, उपन्यास कहानी मात्र नहीं है, उसमे पात्रो के विचार और भाव भी रहते है| उपन्यास के पात्रो के विचार लेखन के विचारो की ही प्रतिध्वनी होते है| लेखन का जीवन के प्रति एक विशेष द्रष्टिकोण होता है, उसी द्रष्टिकोण से वह जीवन की व्याख्या करता है, और उसी के अनुकूल उसके विचार होते है| उपन्यास में बिखरे हुए विचारो में भी एक विशेष अन्विति रहती है| विचारो के विभिन्न पक्ष दिखाए जाते है, किन्तु उनमे मुख्यता उन विचारो की ही होती है, जो लेखक के द्रष्टिकोण के अनुकूल होते है| कभी-कभी लेखक का उद्देश्य जानना कठिन हो जाता है|

मन्नू भण्डारी की रचनाये:

उपन्यास:- एक इंच मुस्कान, आपका बंटी, स्वामी, महाभोज, कलवा (किशोर उपन्यास)

कहानी संग्रह:- एक प्लेट सैलाब, मै हर गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिसंकू, मेरी प्रिय कहानियाँ, मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ, (बाल कहानी)

मन्नू भण्डारी के समग्र साहित्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि मन्नू जी ने अपने साहित्य के अंतर्गत जिन समस्याओ पर एकाग्रता से द्रष्टि रखकर उन्हें प्रस्तुत किया है,

www.ignited.in

वह वर्तमान जीवन की स्थिति का निर्देशन करने में पूर्णता सफल है| उनका महाभोज उपन्यास अद्यतन विकृत राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान व्यवस्था और समाज का ढांचा प्रस्तुत करते है| इनके उपन्यास न केवल उन्हें बहुचर्चित स्थान दिलवा देते है, अपितु उनके सहास, तटस्थ और अंतभेर्दी द्रष्टियुक्त कृतित्व को भी उजागर करते है|

शिवानी के उपन्यासों के उद्देश्य का लोकतात्विक वैशिष्टय:-

प्रत्येक साहित्यकार का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है| वह प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से उनकी रचना में निहित रहता है| साहित्यकार जीवन का पर्यवेक्षक ही नहीं, वह दार्शनिक भी होता है| जीवन के प्रति उसका द्रष्टिकोण उसकी कृतियो के माध्यम से संसार के सामने आता है| शिवानीजी का जीवन-सम्बन्धी द्रष्टिकोण उनके उपन्यासों में व्यक्तहुआ है|

शिवानी के कुछ उपन्यास निरुद्देश्य और कुछ उद्देश्य निष्ठ है| "श्मशान चम्पा", "मायापुरी", "विषकन्या" आदि उपन्यासों में कोई उद्देश्य लक्षित नहीं होता है, केवल करुणा और सन्त्रास की निरुद्देश्य बनाबट से किसी भी कथाकार को क्या हासिल हो सकता है? उसे जीवन के भीतर बैठकर, उत्तरदायी तथ्यों को तलाशते हुये, उन्हें प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करना चाहिए| लेकिन जो कथाकार खुबसूरत और रोमांचक "प्लॉट" अदभुत चरित्र-स्रष्टि, मधुर और कमनीयचित्रांकन को ही अपना लक्ष्य मन लेता है, शायद उसे इस बुनियादी बात पर ध्यान देने का अवसर नहीं मिलता| दुर्भाग्य से शिवानी के साथ उनके कुछ उपन्यासों में यही हुआ है| जहां तक उपन्यास में एक मोहक आकर्षक संसार के निर्माण का प्रश्न है- शिवानी अत्यधिक सफल रही है|

शिवानी के उपन्यासों के दो मुख्य धरातल है| आज की महानगरी चेतना के विभिन्न स्तरों को शिवानी जी ने परत दर परत खोला है, इस प्रकार प्याज के छिलके की तरह एक के बाद एक और दूसरी समस्याएं खुलती चली गई है| नगर जीवन की इन तमाम समस्याओ के केन्द्र है- कलकत्ता, दिल्ली, कानपूर, लखनऊ, बम्बई, और इलाहाबाद आदि| शिवानी पहले से ही बहुत भ्रमणशील लेखिका रही है, और जिन जिन नगरो से उनका परिचय हुआ है, उन उन नगरो का एक वातावरण उनके उपन्यासों में कहीं न कहीं अवश्य चित्रित हुआ है| महानगरीय जीवन की घुटन संत्रस्त, स्थितिया, प्रदुषण, भीड़-भड़क्का, शोर-गुल, गन्दी बस्तियां और सतमजलि इमारतो आदि के चित्र विशेष रूप से उभरते चले गयें है| उन सबके बीच अनेक स्त्री-पुरुषों के चेहरे एक-दुसरे से टकराते चले गए है| उन सबके बीच अनेक स्त्री-पुरुषो के चेहरे एक-दुसरे से टकराते हुए दौड़ते नगर आते है| इनके साथ साथ स्त्री पुरुषो के संबंधो और समस्याओ के रूप अंकित है|

शिवानी की रचनाये:-

उपन्यास:- मायापुरी, चौदह फेरे, कृष्णकली, स्मशान चंपा, कैजा, विषकन्या, रती विलाप, माणिक, रत्या, गौड़ा, किशुनली, भैरवी, सुरंगमा, क्रिश्नावेनी, विवर्त, बदला, तीसरा बेटा, स्वयंसिद्ध, अतिथि, कस्तूरीमर्ग, उपप्रेती |

कहानी संग्रह:- लाल हवेली, पुष्पहार, उपहार, मेरी प्रिय कहानियाँ |

निबंध संग्रह:- वातायन, गवाक्ष, दरीबा, झरोखा, जालक, झुला |

रेखाचित्र एवं संस्मरण:- चार दीन की, अमोदर शान्तिनिकेतन, बिन्नू, क्यों |

रिपोतार्ज:- अपराधिनी

बाल साहित्य:- अलविदा हर-हर गंगे, राधिका नारी, स्वामिभक्त, चूहा, कमाऊ की जंगली कथाये |

उपसंहार:-

रचनाकार लोक में विधमान रहकर जिस रचना का प्रणयन करता है, उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है| प्रकारान्तर से कहें तो यह भी कह सकते है, कि उद्देश्य पूर्ण कृति की सर्जना रचनाकार का मूल मंतव्य होता है| जिस साहित्य के अध्ययन से पाठक में सुरुचि न जागे, मानसिक तृप्ति न मिले, हममे शक्ति व गति उत्पन्न न हो, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं होता है| उपन्यास-साहित्य भी इससे प्रथक नहीं किया जा सकता | इस अध्याय में जो विवचना की गई है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है, कि मन्नू भण्डारी और शिवानी ने लोक जीवन की समस्याओ की विवेचना हेतु अपने-अपने उपन्यासों का सर्जन किया है| सामान्य जन की समस्याओ का अंकन करना दोनों रचनाकारों का मूल प्रयोजन रहा है, और इसमे दोनों ने सफलता प्राप्त की है| भारतीय समाज की समस्याओ, क्षेत्रीय लोक-जीवन यथा बंगाली एवं पहाड़ी समस्याओ पर रचनाकारों का ध्यान केन्द्रित रहा है| यह कहा जा सकता है, की मन्नू भण्डारी एवं शिवानी दोनों ने उद्देश्य पूर्ण कृतिओ का प्रणयन कर साहित्य की वृध्दि की है|

सन्दर्भ सूची:-

"कुछ विचार" के अंतर्गत "उपन्यास" नामक लेख: प्रेमचंद्र |

ऐन एंट रोद्क्शन टू द स्टडी ऑफ़ लिटरेचर: विलियम हेनरी हडसन, पेज 74.

काव्य के रूप: बाबू गुलाबराय, पेज 177.

काव्य के रूप: बाबू गुलाबराय, पेज 179.

कुछ विचार: बाबू प्रेमचंद्र, में "उपन्यास" नामक लेख |

कुछ विचारक: प्रेमचंद्र, पेज 42.

Corresponding Author

Dr. Vikas Dubey*

Professor in Hindi

E-Mail – **vikasdubey281@gmail.com**